

९. आशीष

(१)

जै सुखदेवी नन्दन तुम जग वन्दन प्रीतम प्रेम उपासी हो
जै आनन्द कन्द अलबेला साईं नेह निकुञ्ज निवासी हो
जै मन हरण मनोहर बापू शील सिन्धु सुख रासी हो
सदां जियां साईं अमां प्यारल कथा विरूंह विलासी हो

(२)

जै सुखवास विहारी साईं स्वामिनि चरण पुजारी हो
सती सुहागिनि के सम सुन्दर एक नेह व्रत धारी हो
सदा सनेह सरसब्ज सहो तुम सजननि के सुखकारी हो
सदां जियो साईं अमां प्यारल प्रीति रीति प्रतिपारी हो

(३)

जै गरीबि श्रीखण्डि सन्त शिरोमणि अतिशय चरित उदारा हो
रवि शशि सम चमकत हो निशि दिन प्रेम प्रकाश तुम्हारा हो
अखिल ब्रह्मण्ड नायकु वशि कीन्हो सहज सनेह की धारा हो
सदां जियो साईं अमां प्यारल हंसि मुख हरी हमारा हो

(४)

जै दीनबन्धु सुख सिन्धु सलोने महिमा अमित तुम्हारी हो
जै प्रीतम प्रेम पयोनिधि पूरण पिय कीरति विस्तारी हो
जै लाड़ लड़ावन पिय मन भावन सिय राघव रिझिवारी हो
सदां जियो साईं अमां प्यारल आशीष नित्य हमारी हो